- प्रकार्यवादी
- संघर्षवादी
- सामाजिक व्यवस्था सिद्धांत
- मध्यवर्ती सिद्धांत
- विनियमवादी, प्रतिकात्मक अंतःक्रियावादी
- अंतक्रियावादी
- प्रघटनाशास्त्र, लोकविधि विज्ञान
- संरचनाकरण सिद्धांत

सिद्धांत क्या की है? क्यों है? कितने प्रकार के होते है?

समाज की वास्तविकता को समझने के लिए सिद्धांतों का निर्माण किया जाता है, यथार्थता को समझना ही अंतिम उद्देश्य होता है। समाज की वास्तविकता अत्यधिक विविधतापूर्ण है। समाज की वास्तविकता का संबंध व्यक्ति एवं समाज दोनों से है लेकिन यह दूविधा रही है कि समाज निर्धारक है या व्यक्ति निर्धारक है। सिद्धांत परस्पर विरोधी भी होते है। इसलिए समाजशास्त्रीय सिद्धांतों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है।

1. वृहत स्तरीय सिद्धांत और
2. सूक्ष्म स्तरीय सिद्धांत।

जहां पारसंस एक विशाल सिद्धांत की चर्चा करते है तो मर्टन कहते है कि अभी विशाल तो क्या मध्यस्तरीय सिद्धांत बन जाए तो भी बड़ी उपलब्धि होगी। वर्तमान में सूक्ष्म स्तरीय सिद्धांतों के निर्माण पर बल दिया जा रहा है।

सिद्धांत

- यहां सिद्धांत से तात्पर्य उनसे नहीं है जिसका प्रयोग आम बोल–चाल की भाषा में किया जाता है।
- सिद्धांत पूर्वानुमानों का एक पुंज है। यह दो या अधिक चरों से बनता है
- ये तर्कसंगत रूप से अंतर्सम्बंधित ओर अनुभवपरक प्रमाणित करने के योग्य तर्क वाक्यों का समूह होता है। यह तथ्यों का अमूर्तिकरण है।
- सिद्धांत यह तथ्यों से निकाले गए सामान्यीकरण से बनता है।

फेयरचाइल्ड – सामाजिक घटना के बारे में ऐसा सामान्यीकरण जो पर्याप्त रूप से वैज्ञानिकता पूर्वक स्थापित हो चुका है।

टालकंट पारसंस – सिद्धांत आनुभविक होते हैं तथा इसकी अवधारणाएं तार्किक रूप से परस्पर जुड़ी होती है।

सिद्धांत के तत्व

- तथ्य – घटनाओं के संबंध में ऐसे कथन, जिनका अनुभव के आधार पर परीक्षण किया जा सकता है, तथ्य कहलाते है।
- अवधारणाएं – एक विचार जिसे शब्द/प्रतीक के रूप में अभिव्यक्त किया गया है, जो किसी भी तथ्य/घटना की व्याख्या करने में प्रयुक्त होता है।
- चर – भौतिक या सामाजिक क्षेत्र से संबंधित घटनाएं जो परिवर्तनशील होती है। इस प्रकार की वस्तु या घटना को चर कहते है। ये किसी घटना की मात्रा या गुण में परितर्वन की द्योतक है। आयु, लिंग, आय, शिक्षा, व्यवसाय आदि सब चर है।

सिद्धांतों की विशेषताएं

1. सिद्धांत स्वयं में अमूर्तीकरण होते है।

2. सिद्धांतों में आनुभविकता का गुण होना चाहिए।

3. सिद्धांत में प्रयुक्त अवधारणाओं में तार्किक संबंध होता है।

4. सिद्धांतों का परीक्षण किया जा सके।

5. सिद्धांत का केन्द्रीय आधार निगमनात्मक होते है।

6. सिद्धांत गुणात्मक होते है।

7. सिद्धांत कामचलाउ होते है।

सिद्धांतों के प्रकार/श्रेणीयां

डॉन मार्टिनडेल ने द नेचर एण्ड टाइप्स ऑफ सोशियोलॉजीकल थ्योरी, 1961 में समाजशास्त्रीय सिद्धांतों का पांच श्रेणियों में विभाजित किया है –

1. प्रत्यक्षवादी सावयववाद – ऑगस्ट कॉम्टे से इसका प्रारम्भ होता है, जिस प्रकार भौतिक वस्तुओं का किसी प्रयोगशाला में अवलोकन एवं प्रयोग करके परीक्षण करते है, उसी प्रकार से सामाजिक घटनाओं का परीक्षण किया जा सकता है। कॉम्टे ने समाज एवं सावयव में संबंध स्थापित किया। गिडेंस इसकी संरचनावाद के सिद्धांत में आलोचना करते है। कॉम्टे के बाद स्पेंसर एवं लिस्टर वार्ड ने इसका समर्थन किया।

2. संघर्ष सिद्धांत – यह विचारधारा एवं वैज्ञानिक सिद्धांत के बीच समन्वय है। ये सिद्धांत किसी एक स्वरूप में में नहीं होते है। मार्क्स, डेहरेनडॉर्फ, कोजर के अपने अलग रूप है।

3. स्वरूपात्मक सिद्धांत – यह स्वयं सिद्ध सिद्धांत है। ये अमूर्त प्रस्ताव की श्रेणी में निम्न श्रेणि सिद्धांत आते है। ये आनुभविक सिद्धांतों को जोडकर मध्यस्तर प्रस्ताव बनाते है, तथा ये वृहत सिद्धांतों के निर्माण में सहायक है।

4. सामाजिक व्यवहारवाद – ये सामाजिक मनोविज्ञान के कारण उत्पन्न होते है। ये व्यक्ति को समाज से पृथक कर देते है। इसमें प्रतिकात्मक अंतःक्रियावाद एवं सामाजिक क्रिया सिद्धांत को रखा जा सकता है।

5. समाजशास्त्रीय प्रकार्यवाद – सामाजिक मानवशास्त्र से उत्पन्न। मैलिनोवस्की तथा ब्राउन ने सिद्धांत इसमें शामिल है।

जोथाथन टर्नर ने समाजशास्त्रीय सिद्धातों की चार श्रेणियां बताई जो निम्न प्रकार है –.

1. अधि सैद्धातिक – सामान्य सिद्धांत। कार्ल मार्क्स, वेबर, दूर्खीम, पारसंस आदि सिद्धांतों को इसमें रखा है।
2. विश्लेषणात्मक – मध्यम स्तरीय सिद्धांत
3. प्रस्तावपरक – दो चरों के मध्य संबंध बताने वाले
4. प्रतिरूपण / मॉडल

प्रकार्यवादी सिद्धांत

प्रकार्य की अवधारणा का प्रयोग उन्नीसवीं शताब्दी में स्पेंसर द्वारा किया गया। स्पेंसर ने समाज एवं सावयव में काफी समानता खोजी। इसे व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक अवधारणा का रूप देने में श्रेय इमाइल दूर्खीम को जाता है। दूर्खीम के विचारों को आगे बढ़ाने का कार्य मैलिनावस्की और रेडफिल्ड ब्राउन को जाता है। मर्टन एवं पारसंस आदि ने इसे समाजशास्त्र में स्थापित किया।

संरचनावाद

संरचनावाद का सर्वप्रथम प्रयोग 1900–1930 के मध्य भाषाविज्ञान के क्षेत्र में हुआ। इसमें सामाजिक क्रिया की अपेक्षा सामाजिक संरचना को अधिक महत्व दिया जाता है। इसके पीछे सार्त्र का अस्तित्ववाद उत्तरदायी माना जाता है। समाजशास्त्र में इसका प्रारम्भ दूर्खीम की कृत्रियों से माना जाता है लेकिन दूर्खीम ने इस शब्द का प्रयोग नहीं किया। इसलिए लेवी–स्ट्रास से इसका आगमन समाजशास्त्र में हुआ। नव–प्रकार्यवाद।

संघर्षवादी सिद्धांत

एक विचाराधारा के रूप में संघर्ष सिद्धांत के प्रणेता जर्मन समाजशास्त्री जार्ज सिमेल रहे है। सिमेल के अनुसार संघर्ष अंतक्रिया का एक प्रमुख स्वरूप है। संघर्ष सामाजिक है तथा एकीकरण का एक तरीका माना है जिसमें संघर्षरत व्यक्तियों में से किसी एक का नष्ट होना संभव है। पार्क व बग्रेस एवं लेविस कोजर ने भी इसी संघर्ष के एकीकरण का समर्थन किया। नव–मार्क्सवाद। विवेचनात्मक सिद्धांत।

सामाजिक विनियम सिद्धांत – इस सिद्धांत के प्रमुख विचारक मैलिनोवस्की, जार्ज होमन्स(विनियम व्यवहारवाद), लेवीस्ट्रास तथा पीटर ब्लाउ है। मैलिनोवस्की ने मलेशिया और आस्ट्रेलिया में प्रचलित कुला की व्याख्या की, जो उपहार–विनियम की एक विख्यात प्रथा है।

प्रतिकात्मक अंतःक्रियावाद – इस सिद्धांत का प्रतिपादन हर्बर्ट ब्लूमर द्वारा किया गया। इसमें सी.एच. कुले का आत्मदर्पण का सिद्धांत आता है तथा हरबर्ट मीड का स्व का सिद्धांत, गौफमैन का सिद्धांत का वर्णन आता है।

सामाजिक क्रिया सिद्धांत – पेरेटो, वेबर एवं पारसंस
सामाजिक व्यवस्था सिद्धांत – पारसंस
प्रघनाशास्त्र – हसरेल, शुट्ज, जार्ज सान्त्याना।
लोकविधिविज्ञान – हैराल्ड गारंफिंकल।

उपरोक्त सिद्धांतों का संक्षिप्त वर्णन

यह समाजशास्त्र का प्रारम्भिक सिद्धांत है। स्पेंसर से लेकर अलेक्जेंडर तक ने इसका वर्णन किया हैं भारत में एम.एन. श्रीनिवास, एस सी दूबे मैकिम मैरियट आदि ने इसका वर्णन किया है। समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए इसके विभिन्न प्रक्रियाओं में सामजस्य बना रहे। इसलिए समाज के सभी अंग/इकाई कोई न कोई प्रकार्य करती है। यह सावयवी सादृश्यता पर आधारित एक सिद्धांत है जिसकी मान्यता है कि समाज एक संगठित एवं आत्म रक्षित/संतुलित व्यवस्था है।

प्रकार्य की अवधारणा का प्रयोग उन्नीसवीं शताब्दी में स्पेंसर द्वारा किया गया। स्पेंसर ने समाज एवं सावयव में काफी समानता खोजी। इसे व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक अवधारणा का रूप देने में श्रेय इमाइल दूर्खीम को जाता है। दूर्खीम के विचारों को आगे बढ़ाने का कार्य मैलिनावस्की और रेडफिल्ड ब्राउन को जाता है।

मैलिनोवस्की प्रथम सामाजिक सांस्कृतिक मानवशास्त्री थे जिन्होंनें प्रकार्यवादी विचारधारा को व्यवस्थित किया। सहभागी अवलोकन/क्षेत्रीय कार्य द्वारा ट्रोबियाण्ड द्वीप समूह के जनजातीय समूदाय की संस्कृति का अध्ययन किया तथा सांस्कृतिक सापेक्षवाद के विचार प्रकट किए। इस प्रकार्यवादी विश्लेषण में संस्कृति को पूर्णता के रूप में देखा तथा उसके विभिन्न अंगों के मध्य प्रकार्यात्मक एकीकरण की अनिवार्यता को स्वीकार किया। आवश्यकताओं का सिद्धांत दिया।

रैडक्लिफ – ब्राउन के अनुसार किसी सामाजिक तत्व का प्रकार्य उस तत्व का योगदान है जो कि वह सामाजिक व्यवस्था की क्रियाशीलता के रूप में सामाजिक जीवन को करता है। ब्राउन ने व्यक्ति के अस्त्वित्व पर जोर न देकर समाज के अस्तित्व पर जोर दिया है।

रॉबर्ट के मर्टन को प्रकार्य के व्यवस्थित रूप देने वाले के तौर पर जाना जाता है। मर्टन ने प्रकार्यवाद को समृद्ध किया। प्रकट एवं अप्रकट प्रकार्यवाद की अवधारणा प्रस्तुत की।

संरचनावाद – संरचनावाद का सर्वप्रथम प्रयोग 1900–1930 के मध्य भाषाविज्ञान के क्षेत्र में हुआ। इसमें सामाजिक क्रिया की अपेक्षा सामाजिक संरचना को अधिक महत्व दिया जाता है। इसके पीछे सार्त्र का अस्तित्ववाद उत्तरदायी माना जाता है। समाजशास्त्र में इसका प्रारम्भ दूर्खीम की कृत्रियों से माना जाता है लेकिन दूर्खीम ने इस शब्द का प्रयोग नहीं किया। इसलिए लेवी–स्ट्रास से इसका आगमन समाजशास्त्र में हुआ। ब्राउन के अनुसार मनुष्य ही सामाजिक संरचना के अंग है तथा यह एक गतिशील निरंतरता है। पारसंस ने संरचनात्मक प्रकार्यवाद दृष्टिकोण की वकालत की। नाडेल ने अनुसार संरचना शब्द से विभिन्न अंगों के एक व्यवस्थित तथा क्रमबद्ध योग का बोध होता है। नाडेल ने प्रकार्य की अपेक्षा संरचना पर बल दिया।

संघर्षवादी सिद्धांत

एक विचाराधारा के रूप में संघर्ष सिद्धांत के प्रणेता जर्मन समाजशास्त्री जार्ज सिमेल रहे है। सिमेल के अनुसार संघर्ष अंतक्रिया का एक प्रमुख

स्वरूप है। संघर्ष सामाजिक है तथा एकीकरण का एक तरीका माना है जिसमें संघर्षरत व्यक्तियों में से किसी एक का नष्ट होना संभव है। पार्क व बग्रेस एवं लेविस कोजर ने भी इसी संघर्ष के एकीकरण का समर्थन किया।

मार्क्स ने संघर्ष सिद्धांत को चरम पर पहुंचाया। द्वंद्वात्मक एवं ऐतिहासिक भौतिकवाद के माध्यम से इसकी व्याख्या की। रॉल्स डेहरानडॉर्फ ने संघर्ष सिद्धांत को सत्ता से जोड़ा। सत्ता संरचना सामाजिक संगठन का अनिवार्य अंग है और संघर्ष का कारण सामाजिक संरचना में ही सन्निहित होता है। संघर्ष के कारण ही समाजिक संरचना में परिवर्तन होता है। ये संघर्ष सत्ता के असमान बंटवारे के कारण होता है।

लेविस कोजर ने अपनी पुस्तक द फंक्शन्स ऑफ सोशल कॉन्फ्लीक्ट में संघर्षवादी सिद्धांत प्रस्तुत किया, इसे संघर्ष का प्रकार्यवाद भी कहा जाता है। कोजर के अनुसार संघर्ष के दो संभावित परिणाम होते है एक संगठनात्मक तथा दूसरा विघटनात्मक।

सामाजिक विनियम सिद्धांत – इस सिद्धांत के प्रमुख विचारक मैलिनोवस्की, जार्ज होमन्स तथा पीटर ब्लाउ है। मैलिनोवस्की ने मलेशिया और आस्ट्रेलिया में प्रचलित कुला की व्याख्या की, जो उपहार–विनियम की एक विख्यात प्रथा है।

प्रतिकात्मक अंतःक्रियावाद

इस सिद्धांत का प्रतिपादन हर्बर्ट ब्लूमर द्वारा किया गया। इसमें सी.एच. कुले का आत्मदर्पण का सिद्धांत आता है तथा हरबर्ट मीड का स्व का सिद्धांत का वर्णन आता है।